मधुबन ओम् शान्ति अंक 266 सितम्बर 2014

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(12-08-14)

विश्व रक्षक प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा स्व-रक्षक बन विश्व कल्याण की सेवा में उमंग-उत्साह से आगे बढ़ने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी ने रक्षाबंधन के पावन पर एक दो को स्नेह का सूत्र बांधते, पवित्रता की प्रतिज्ञा के दृढ़ संकल्प करते कराते खूब बेहद की सेवायें की, हमें भी चारों ओर से अनेक भाई बहिनों के याद पत्र, सेवा समाचार के ईमेल, सुन्दर-सुन्दर राखियां, स्नेह वा शुभ भावनाओं भरे सन्देश मिले हैं। रिटर्न में सभी को दिल से बहुत-बहुत दुआओं भरी यादप्यार स्वीकार हो।

ड्रामा की यह भी न्यारी प्यारी सीन देख मीठे बाबा से मीठी-मीठी रूहरिहान करती रहती हूँ। बाबा आपने मुझे लोटस हाउस में बिठाकर सबको लोटस जैसा न्यारा प्यारा बनाने की सेवा दी है। यहाँ भी बाबा के अनेक बच्चे आते मिलन मनाते रहते हैं। आप सबकी यादें भी पहुंचती रहती हैं। हमारा यह ईश्वरीय परिवार कितना बड़ा, कितना अच्छा मीठा परिवार है, कोई भी ऐसा नहीं है जो मैं कहूँ यह अच्छा नहीं है। कोई कहे कि यह अच्छा नहीं है, तो यह अंगुली (अंगुठे के साथ वाली सेकण्ड अंगुली) बहुत काम की है। यह इशारा करती हूँ कि जैसे बाबा वन्डरफुल है, ऐसे यह ड्रामा भी बहुत-बहुत वन्डरफुल है। ड्रामा की नॉलेज सदा ही बेफिक्र बादशाह बना देती है। फिकर कौन करता है? जिसको अन्दर ही अन्दर निश्चय का बल नहीं है। निश्चय का बल बड़ा अच्छा फल देता है। बल और फल। निश्चय से बल आया, फल प्रैक्टिकल सफल हो गया। न अभिमान है, न कोई अपमान की फीलिंग है। भक्ति में गीत गाते हैं, मैं नहिं माखन खायो मैया...। परन्तु भगवान कहता है, कराने वाला मैं हूँ, करने वाले तुम हो। करावनहार सब करा रहा है, अभिमान आ नहीं सकता।

अभी मैं यहाँ बाबा के सामने बैठी हूँ। बाबा साकार, अव्यक्त, निराकार तीनों की भासना दे रहा है। मुझे तो यही संकल्प रहता कि बाबा का कोई भी बच्चा ऐसे खाली महसूस न करे। बाबा ने सब कुछ दिया है, सदा भरपूर रहो, सन्तुष्ट रहो, सन्तुष्टता का वायुमण्डल बनाओ। जब मैं कहती हूँ ''मेरा बाबा'' तो बाबा फिर कहता है ''मेरा बच्चा''। इस मेरेपन में कितनी कशिश है! अभी यह सब दिल की बाते हैं ना, यह बताई नहीं जा सकती, परन्तु प्रैक्टिकल में सब देखें। हम सब इस बेहद नाटक में पार्ट बजा रहे हैं। यह नाटक कहता है - ना अटक, ना अटको, ना लटको, ना चटको। मेरा बाबा, मीठा बाबा बस, बहुत सहज है ना, और क्या चाहिए!

बाकी मीठे बाबा की जो रोज़ की मुरली होती, उसमें जो विशेष वरदान होते, मैं तो बाबा की मुरली पढ़ते दिल में समा लेती हूँ, दिल से निकलता वाह बाबा वाह! आप कितना प्यार से मुझ आत्मा का श्रृंगार कर रहे हो। एक एक वरदान बुद्धि की कपाट ही खोल देता है। उस पर मनन करो, चिंतन करो तो व्यर्थ और निगेटिव आ

ही नहीं सकता। आज भी बाबा ने हम सबको सुख स्वरूप स्थिति में रह मास्टर सुखदाता बनने का वरदान दिया है।

तो सबको सुख देते सुख लेते, खुशी की खुराक खाते सदा संगम की मौजों का अनुभव करते रहो।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत स्नेह भरी याद ....

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

बेगमपुर के बादशाह बनो

1) सबसे बड़े ते बड़ा बादशाह है बेफिक्र बादशाह और सबसे बड़े ते बड़ा राज्य है बेगमपुर का राज्य। बेगमपुर के राज्य अधिकारी के आगे यह विश्व का राज्य भी कुछ नहीं है। यह बेगमपुर के राज्य का अधिकार अति श्रेष्ठ और सुखमय है। है ही बे-गम। तो सदा इसी रूहानी नशे में रहो कि हम बेगमपुर के बादशाह हैं, नीचे नहीं आओ।

2) बेगमपुर का बादशाह अर्थात् सर्व खुशियों के खजाने का मालिक। खुशियों का खजाना ब्राह्मणों का जन्मसिद्ध अधिकार है, इस अधिकार के कारण ही आज श्रेष्ठ आत्माओं के नाम और रूप का सत्कार होता रहता है। ऐसे बेगमपुर के बादशाह, जिन्हों का नाम लेने से ही अनेक आत्माओं के अल्पकाल के लिए दु:ख दूर हो जाते हैं, जिनके चित्रों को देखते चरित्रों का गायन करते हैं और दु:खी आत्मा खुशी का अनुभव करने लगती है, ऐसे चैतन्य आप स्वयं बेगमपुर के बादशाह हो।

3) बापदादा ने टाइटल ही दिया है - बेफिक्र बादशाह, बेगमपुर के बादशाह। तो जब भी कोई ऐसी बात आये, तो आप बेगमपुर में चले जाना। आपने आह्वान किया है कि पुरानी दुनिया जाये और नई दुनिया आये, तो जायेगी कैसे? जरूर नीचे ऊपर होगी तब तो जायेगी, तो कुछ भी हो जाए लेकिन आपको बेफिक्र बनना ही है।

4) जहाँ ईश्वरीय फ़खुर है वहाँ फिकर हो नहीं सकता, बेफिकर बादशाह, बेगमपुर के बादशाह बन जाते हैं। तो आप सभी ईश्वरीय सम्पन्नता के खजाने वाले बेफिकर बादशाह हो ना! क्या होगा, कैसे होगा, इसका भी फिकर नहीं। त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित रहने वाले जानते हो जो हो रहा है वह सब अच्छा, जो होने वाला है वह और अच्छा।

5) गम और बेगम की अभी नॉलेज है, इसके होते हुए उस स्थिति में सदा निवास करते इसलिये बेगमपुर का बादशाह कहा जाता है। भल बेगर हो लेकिन बेगर होते भी बेगमपुर के बादशाह हो। बादशाह अथवा राजे लोगों में ऑटोमेटिकली शक्ति रहती है राज्य चलाने की। लेकिन उस ऑटोमेटिक शक्ति को अगर सही रीति काम में नहीं लगाते, कहीं ना कहीं उल्टे कार्य में फंस जाते हैं तो राजाई की शक्ति खो लेते हैं और राज्य पद गंवा देते हैं।

6) अभी तुम बच्चे बेगमपुर के बादशाह हो और सर्वशक्तियों की प्राप्ति है लेकिन अगर कोई ना कोई संगदोष वा कोई कर्मेन्द्रिय के वशीभूत हो अपनी शक्ति खो लेते हो तो जो बेगमपुर का नशा वा खुशी प्राप्त है वह स्वत: ही खो जाती है, इसलिए मैं अष्ट शक्ति स्वरुप बेगमपुर का बादशाह हूँ, इस स्मृति को कभी भूलना नहीं।

7) विधि और विधान को जानने वाले बच्चे हर संकल्प और हर कर्म में सिद्धि स्वरुप होते हैं। सिद्धि स्वरुप अर्थात् बेगमपुर के बादशाह। भविष्य राज्य-भाग्य प्राप्त करने के पहले वर्तमान समय भी बेगमपुर के बादशाह हो। संकल्प में भी गम अर्थात् दु:ख की लहर न हो क्योंकि दु:खधाम से निकल अब संगमयुग पर खड़े हो।

8) कभी भी व्यर्थ संकल्पों के हेमर से समस्या के पत्थर को तोड़ने में नहीं लगना। अब यह मजदूरी करना छोड़ो, बादशाह बनो। बेगमपुर का बादशाह हूँ, इस स्मृति में रहो तो न समस्या का शब्द होगा, न बार-बार समाधान करने में समय जायेगा। यही संस्कार पुराने आपके दास बन जायेंगे, वार नहीं करेंगे। तो बादशाह बनो, तख्तनशीन बनो, ताजधारी और तिलकधारी बनो।

9) बापदादा का हर बालक मालिक है। संगमयुग बेगमपुर, मूलवतन बेगमपुर, स्वर्ग बेगमपुर, तीनों के मालिक हो। ऐसे मालिकों के हर संकल्प सिद्ध होते हैं। ऐसी रेखा वाले सदा बेगमपुर के बादशाह होंगे। वे मुख से सदैव महावाक्य बोलेंगे। महावाक्य गिनती के होते हैं। तो दोनों एनर्जी संकल्प की और वाणी की व्यर्थ खर्च नहीं करो।

10) बेगमपुर के बादशाह सदा सुख की शैय्या पर सुखमय संसार में स्वयं को अनुभव करते हैं। ब्राह्मणों के संसार वा ब्राह्मण जीवन में दु:ख का नाम निशान नहीं क्योंकि ब्राह्मणों के खजाने में अप्राप्त कोई वस्तु नहीं। जब सम्पत्ति, सम्बन्ध सब प्राप्त हैं तो बेगमपुर अर्थात् संसार है। सदा सुख के संसार के बालक सो मालिक अर्थात् बादशाह हो।

11) ब्राह्मण आत्मायें जहाँ भी हैं, दु:ख के वायुमण्डल के बीच भी कमल समान, दु:ख से न्यारे, बेगमपुर के बादशाह हैं। तन की बीमारी के दु:ख की लहर वा मन में व्यर्थ हलचल के दु:ख की लहर वा विनाशी धन के अप्राप्ति की वा कमी के दु:ख की लहर, स्वयं के कमज़ोर संस्कार वा स्वभाव वा अन्य के कमज़ोर स्वभाव और संस्कार के दु:ख की लहर वायुमण्डल वा वायब्रेशन्स के आधार पर दु:ख की लहर, सम्बन्ध सम्पर्क के आधार पर दु:ख की लहर, कोई भी दु:ख की लहर अपना प्रभाव डाल नहीं सकती।

12) मुरलीधर की मुरली के साज़ से अविनाशी दुआ की दवा मिलते ही तन दुरुस्त, मन दुरुस्त हो जाता है। मस्ती में मस्त हो बेपरवाह बादशाह बन जाते हैं। बेगमपुर के बादशाह बन जाते हैं। स्वराज्य-अधिकारी बन जाते हैं। जितना जो विधिपूर्वक मुरली सुनते हैं उतना ही सिद्धि स्वरुप बन जाते हैं।

13) कभी भी कोई सेवा उदास करे तो समझो वह सेवा नहीं है। डगमग करे, हलचल में लाये तो वह सेवा नहीं है। सेवा तो उड़ाने वाली है। सेवा बेगमपुर का बादशाह बनाने वाली है। बेपरवाह बादशाह, बेगमपुर के बादशाह, जिसके पीछे सफलता स्वयं आती है। आप सुखदाता की सुख स्वरुप आत्मायें हो, सुख के सागर बाप के बच्चे हो, सदा इसी स्मृति में रहना।

14) जैसे बच्चे माँ के पास स्वत: ही जाते हैं। कितना भी अलग करो फिर भी माँ के पास जरुर जायेंगे। तो सुख शान्ति की माता है पवित्रता। जहाँ पवित्रता है वहाँ सुख शान्ति खुशी स्वत: ही आती है। यह ब्राह्मण परिवार बेगमपुर अर्थात् सुख का संसार है। तो इस सुख के संसार, बेगमपुर के बादशाह बन गये। हिज़ होलीनेस भी हो, लाइट का ताज पवित्रता की निशानी है और बापदादा के दिलतख्तनशीन हो। तो सदा ताज, तख्त और तिलकधारी बनकर रहना।

शिवबाबा याद है ? 8-3-13 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"सुखी रह भावना से ऐसी सेवा करो जो सबको सुख मिले तब कहेंगे सच्चे सेवाधारी"

(दादी जानकी)

कितने बच्चे दौड़-दौड़कर बाबा के पास आ जाते हैं। भले तकलीफ भी होती होगी पर बाबा के पास जा रहे हैं, बाबा ऐसा है जो सिकीलधे बच्चे, मीठे बच्चे कहकर हमारे दिल को पिघला देता है। उसके सिवाए कोई नज़र नहीं आता। एक बाबा दूसरा न कोई। आज बाबा ने ब्राह्मणों की बहुत महिमा की है। देवतायें कोई ज्ञान नहीं सुनायेंगे। नशा है हम ब्राह्मण मुख वंशावली हैं, एडाप्टेड बाबा के बच्चे हैं। बाबा अपना बना कर, राजयोग सिखाकर राजाओं का राजा बना रहा है।

राजाओं के घर में जो मन्दिर होते हैं वह बड़े फर्स्टक्लास होते हैं। वह भी समझते हैं परमात्मा के द्वारा हमको राजाई मिली है। हम जानते हैं एक जन्म में दान पुण्य करने से राजाई मिली है। राजाई भले मिली, धन मिला पर तन ऐसा, लंगड़ा। हमारा सतयुग में तन कैसा होगा! मन कैसा होगा! बाबा ऐसा बना रहा है। आत्मायें सतो रजो तमो तीनों से जरूर पास करेंगी। अभी हम सतोगुणी बनकर सतोप्रधान बन रहे हैं। प्रकृति के 5 तत्वों को भी सतोप्रधान बना रहे हैं। शुरू में पुरुषार्थ करते थे मुझे सतोगुणी बनना है। अगर मेरी सतोगुणी बुद्धि है तो दृष्टि, वृत्ति, बोल चाल ऐसा है। रजोगुणी है तो मिक्सचर है। तमोगुणी है तो कैसा.. बचाओ अपने आपको। एकदम सतोगुणी दृष्टि वृत्ति कितनी सुखदाई है। सुखी बनने से सेवा होगी। अगर मैं कोई बात में दु:ख करेंगी कोई और फीलिंग होगी तो दूसरों को क्या देंगी। सेवा क्या है? सेवा है बाबा ने जो मुझे दिया है वह सबको मिले, भावना है। कोई भी प्रकार की सेवा है, सेवाधारी भावना से सेवा करते हैं तो सबको सुख मिलता है। कई बाबा के बच्चे परिवार में रहते ट्रस्टी और विदेही रहकर अपने जीवन का यादगार बना देते हैं। कई ऐसे मिसाल हैं। आज के जमाने में कोई मिसाल चाहिए। बाबा ने ऐसे मिसाल बनाये जो सेवाओ से इतनी वृद्धि हुई है।

जीवन यात्रा है। मधुबन तीर्थ स्थान है। यहाँ आते हैं दर्शनीयमूर्त बनने के लिए। बाबा का एक एक महावाक्य हीरे तुल्य बनाने वाला है। हमारे जीवन की वैल्यु क्या है! पहले कौड़ियों के पिछाड़ी कौड़ी जैसी जीवन थी। अभी हीरे जैसी जीवन बन गई। अभी हमें कुछ नहीं चाहिए। दाल रोटी खाना, प्रभु के गुण गाना। प्यारा बाबा, शिवबाबा ऐसा बनाने वाला दिलवाला बाबा दिल में बैठा है। बाबा के लिए इतना प्यार, इतनी खुशी...।

बाबा नये बच्चों को ज्यादा प्यार करता है। बाबा खुश होता है फिर भी बच्चा समय पर आ गया, अपने कुल का बच्चा है ना। पुराने समझते हैं वाह बाबा वाह! हमको पहले से खींचकर जीवन सफल करने का रास्ता दिखाया। कभी मनमत नहीं। कोई के पास मनमत का ऐसा प्लैन होता है जो औरों को भी ऐसा ही चलाते हैं। और कोई पुरुषार्थ भले नहीं करो सिर्फ अपने चिंतन को शुद्ध श्रेष्ठ बनाओ। हर एक के लिए शुभचिंतक रहो। शुभचिंतन में रहना ही हमारी दवाई है, कोई तन मन की बीमारी नहीं लगेगी। कोई कमी नहीं रहेगी। सबके लिए शुभचिंतक रहेंगे तो दुआयें मिलेंगी। दुआयें मांगने से नहीं मिलती हैं। सच्चे दिल से अपना पुरुषार्थ करते हैं तो बाबा के प्यार के साथ दुआ है। एक पेनी, एक संकल्प, समय व्यर्थ नहीं

गंवाना है। जो मुझे जानते हैं मैंने कभी संकल्प, समय, पैसा गंवाया नहीं है। शाहन का शाह तीनों लोकों का मालिक मेरा बाबा है। जब चाहें यहाँ बाबा के साथ रहें, जब चाहे सूक्ष्म वतन, मूलवतन में रहें। कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर यहाँ तपस्या कर रहे हैं, वहाँ मूलवतन में भी साथ होंगे। बाबा कितना विचार सागर मंथन करके अनुभव कराता है।

दूसरा क्लास

"मैं करता हूँ या मुझे करना है, इस भान से परे रहने वाला ही केयर फ्री है"

(दादी जानकी)

आज बाबा ने कितना बारी ध्यान खिंचवाया कि भले और कुछ भी न करो सिर्फ चलते-फिरते, उठते-बैठते बाबा को याद करते रहो। कोई हठयोग की जरुरत नहीं है, अशरीरी बनने का अभ्यास करो तो देहभान छूटता है। बाकी आत्मा भी सूक्ष्म है, परमात्मा भी सूक्ष्म स्टार मिसल है परन्तु आत्मा और परमात्मा को जानने के लिए दिव्य बुद्धि और दिव्य दृष्टि की जरुरत है। बुद्धि दिव्य होने से दृष्टि भी दिव्य हो जाती है। तो अपनी दृष्टि को देखना है क्योंकि शुरू में हम कहते थे योग से दृष्टि महासुखकारी हो जाती है। जब अनेकों को सुख देने वाली दृष्टि है तो अपने को बाप समान दाता, वरदाता, भाग्यविधाता फील करते हैं। जो जानता है वो देता है फिर भाग्य विधाता बन जाता है। ज्ञान दान से हमारे पुण्य कर्म का खाता बढ़ जाता है। जिसको दान मिला उनके दिल से दुआयें निकलेगी। लौकिक दुनिया में परमात्मा से, बड़ों से दुआयें मांगते हैं, अभी यह जो दुआ मिलती है इसका जो सूक्ष्म अनुभव है, वो हमारे ऊपर बड़ा काम करता है।

हम कल्प पहले वाले बाबा के बच्चे हैं, कल्प के बाद फिर मिलेंगे, पहले भी मिले थे, हैं, होंगे कोई फर्क नहीं होगा... ड्रामा बना हुआ है। हदों से पार ले जाने वाला बेहद का बाबा, बेहद की नॉलेज द्वारा बेहद की राजाई देता है। तो अभी आत्मा और परमात्मा का ज्ञान मिलने से इसी सृष्टि में हम सतोप्रधान बनेंगे और राज्य भाग्य पायेंगे। हम आत्मा परमात्मा की सन्तान हैं, यह ज्ञान सिर्फ सुनने सुनाने के लिए नहीं है, अभी हर एक को लगता है, कैसे प्रैक्टिकली मास्टर सर्वशक्तिवान बनने से मायाजीते, जगतजीत बन जायेंगे। तो दिन-रात, सुबह-शाम सिर्फ बिजी रहने के लिए सेवा नहीं करते, पर भाग्य बनाने के लिए सेवा करते हैं जहाँ कदम रखो वहाँ सेवा है। ब्राह्मण शब्द ही कितना ऊंचा है, चोटी है क्योंकि अभी वो परमात्मा के सिर पर बैठे हैं। अभी अनुभव करो भागीरथ के मस्तक से गंगा निकली है, ब्रह्माबाबा का मस्तक देखते, देखते मुख से गंगा निकल आई है।

हम कौन हैं? किसके हैं? क्या बने हैं? क्या बनना है? ब्राह्मण बने, बहुत अच्छा। ''क्यों'' व्यर्थ ले आता है। तो क्यों है नहीं, क्यू में खड़े नहीं होते हैं, सोचने में टाइम नहीं गँवाते हैं। जिसको 108 की माला में आना हो, तो एक बाबा, लगाओ बिन्दी, 8 शक्तियाँ समय पर काम करें, तो माला में आ गये, इज़ी है। यहाँ जो विधि मिलती है सीखने की, वो बहुत यूज़फुल है, पर अन्दर एम हो मुझे बाबा के गले की माला बनना है। 16 हजार में आने के लिए भी बुद्धि स्वच्छ चाहिए। मैं भाग्यशाली हूँ, इसमें खुश न हो जाओ, मुझे तो सौभाग्यशाली बनना है। फिर पदमापदम सौभाग्यशाली, जहाँ मेरा कदम वहाँ कमाई ही कमाई है। और वन्डर तो यह है पढ़ाई पर जितना अटेन्शन रखो उतनी कमाई, पढ़ाई के एक शब्द में ही कमाई महसूस होती है। इसके लिए रोज़ रात को अपना एकाउण्ट देखना है, माया मुझे घाटे में न डाले, इसका ध्यान रखना है क्योंकि जिसका अन्दर से कमाई का इन्ट्रेस्ट है वो उस कमाई के पीछे समय देता है, कमाता है फिर समय सफल होता है तो और खुशी आती है।

इतना कमाना है जो 21 जन्मों तक सुखी रहें, सारे विश्व भर की आत्माओं को सुख मिले, शान्ति मिले क्योंकि अभी सुख-शान्ति, आनन्द-प्रेम का खज़ाना इतना मिला है तो क्या करूँ? कुछ नहीं करो, कर्तापन के भान से परे रहो। मैंने कहा या मुझे करना है, मैं करता हूँ या मुझे करना है, इस भान से परे रहने वाला केयर फ्री है। ऐसा जीवन सफल करने की जो विधियाँ बाबा ने बताई हैं, उसमें कोई भी एक विधि को अपनाओ तो सिद्धि मिल जाती है। बाबा कहे ऐसे करो तो हो जाता है। कोई बात समझ में आती है तो सेकेण्ड में आ जाती है। अगर सेकेण्ड में किसी को समझ में नहीं आती तो वो बहुत टाइम लगाते हैं। तो कभी नीचे, कभी ऊपर तो लम्बा टाइम ले लेते हैं। फिर मेहनत लगती है तो थक जाते हैं। जिनको बाबा और यज्ञ के प्रति अति प्यार है, उनके प्रति बाबा का भी बहुत प्यार रहता है। कार्य करते फौरन न्यारा हो जाना और जितना मुरली रिवाइज़ करो उतना अच्छा है। बिजी हो जाना, यह गृहस्थी के संस्कार है इसलिए ट्रस्टी के संस्कार बनाओ। कोई भी कमी-कमजोरी का संस्कार सदा के लिए त्याग उसका सन्यास करना है। अच्छा।

तीसरा क्लास

"यज्ञ सेवा करते, मेरे कारण किसी के भी व्यर्थ संकल्प न चलें, बहुत खबरदार होशियार रहना है"

(दादी जानकी)

यह समय बहुत वैल्युबुल है। समय की कीमत हम अपने पुरुषार्थ अनुसार जानते हैं। यह समय बाप से मिलन मनाने का है। बहुत समय से बिछुड़े हैं, सतयुग त्रेता में यह फीलिंग नहीं थी, सुख में सब भूल गया। प्रालब्ध भोग रहे थे, यहाँ का पुरुषार्थ था। अभी संगम के समय का महत्व जानते हैं इसलिए बीती सो बीती। बाबा ने हम सबको डॉयमण्ड चाबी दे दी – मीठा बाबा, प्यारा बाबा, मेरा बाबा... यह डायमण्ड शब्द बाबा ने सिखाया है। दिल कहती है बाबा तेरा शुक्रिया। अपने आपको देखो बाबा ने क्या बनाया है! बाबा की हमारे प्रति क्या आशाये हैं! बाबा की हम बच्चों प्रति जो आशायें हैं, उम्मीदें हैं, जरूर पूरी करेंगे। भक्ति में भी कहते हरि इच्छा, अपनी कोई इच्छा नहीं है। भगवान ने मेरे ऊपर यह बहुत मेहरबानी की है जो कोई इच्छा नहीं है। इच्छा यही है प्रभु लीला में अच्छे से अच्छा पार्ट बजाऊं। मुझ आत्मा को जीना, शरीर में रहना, देह संबंध से न्यारा रहना बाबा आपने सिखाया है। जितना न्यारा, उतना प्यारा। कोई प्यारा नहीं है तो समथिंग मिसिंग हैं अथवा मिक्सिंग है। अगर बाबा से प्यार नहीं खींचते हैं तो सूखे-सूखे हो जाते हैं। झाड की वृद्धि तो हुई लेकिन फल भी ऐसा हो जो उसको खाने वाला, ज्यूस पीने वाला खुश हो जाए। फल की इच्छा नहीं है, अल्पकाल के सुख की, मान शान की इच्छा नहीं है। सच्चाई, प्रेम से याद और सेवा से, सच्चाई का फल खा रहे हैं। अपने मन बुद्धि से चलना दूसरों को राय देना, इससे पाप विनाश नहीं होते हैं और ही बन जाते हैं। तो बाबा ने जो दिया है वही मेरे साथ हो। तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बैठूं। मीरा को तो थोड़ा साक्षात्कार हुआ। हम तो भगवान के साथ बोलते, खाते, उनके संग रहते, वन्डरफुल भाग्य है। तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बैठूं, तुम्हीं संग रहूं, तुम्हीं से बोलूं...।

सन्यासी जब सन्यास करते हैं तो पहले वाला नाम भूल जाता है। हर नाम के पीछे आनंद आ जाता है। जैसे गंगेश्वानंद... ऐसे ब्रह्माकुमार माना बाबा के जो गुण है उसके मास्टर हैं। बाबा ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर, आनंद का सागर, सर्वशक्तिवान है तो बच्चे ज्ञान स्वरूप, प्रेम, आनंद स्वरूप शक्ति स्वरूप मास्टर दाता हैं। तो हर एक अपने स्वरूप को देखें।

जैसे बाबा ने सुनाते सुनाते फिर 5 मिनट ड्रिल कराई। तो सभी का अटेन्शन रहा, सभी ने ड्रिल किया। एकदम शान्त।

बाबा ने कहा बर्थ डे की सौगात दे दो कोई व्यर्थ संकल्प विकल्प नहीं चलेगा। व्यर्थ संकल्प को चलने की ताकत नहीं है। वह आ नहीं सकता। बाबा जो सुनाता है, पर्सनल हमको सुना रहा है। इतना अच्छा यज्ञ चल रहा है। आंखे खोलकर देखो, सारे विश्व में सेवा चल रही है। हमारा अगर व्यर्थ संकल्प है तो हम अपनी सेवा नहीं कर रहे हैं। भले यज्ञ सेवा कर रहे हैं अगर मेरे कारण किसी के व्यर्थ संकल्प चल रहे है तो भी सेवा नहीं है। इतना खबरदार, होशियार। बाबा की याद तभी आयेगी, औरों को मेरे से शान्ति का अनुभव तभी होगा जब मेरे कारण किसी के संकल्प न चलें।

दादा विश्वरतन सदा कहा करते मेरा तो व्यर्थ नहीं चलता लेकिन मेरे कारण किसका व्यर्थ संकल्प न चले। एक एक पूर्वज में कोई न कोई विशेषता वा गुण थे, वह वन्डरफुल। बाबा जैसे चलाये, जो बाबा खिलाये, बाबा से इतना प्यार हर एक का रहा है।

बाबा ने कहा पवित्रता में ही सत्यता है। पवित्रता में अंश मात्र भी अपवित्रता है तो सच्चा होकर चल नहीं सकता। भगवान के घर में झूठ नहीं चल सकता। थोड़ा भी झूठ, थोड़ा भी हेराफेरी, अन्दर एक है बाहर दूसरा है। तो खबरदार, होशियार, सावधान। पुराने जमाने में आवाज में चौकीदार बोलते थे, खबरदार रहो, होशियार रहो... चौकीदार क्यों रखते हैं? कोई चोर घुस न आवे। हमारे ऊपर बाबा सारा दिन चौकी करता है। गुडमार्निगं भी करता है तो गुडनाइट भी करता है।

जो थोड़ा भी दान करता है तो दान से पुण्य बन जाता है, वह महादानी बन जाता है। जो महादानी है उनको बाबा वरदान देता है। वरदान है बच्ची हो जायेगा, हुआ ही पड़ा है। यह बाबा के मीठे महावाक्य कानों से सुने हैं, बाबा के वरदानों से सारी लाइफ चली है। बाबा के वरदान हमारी लाइफ को साथ देते हैं।

दादी की प्रैक्टिकल भावना से यज्ञ में इतनी वृद्धि हुई है। जब इतने सबको यहाँ देखते हैं तो हर एक की आँखें खुल जाती हैं कि इतना हमको भी पुरुषार्थ करके आगे बढ़ना है। ज्ञान में आये, रोशनी मिली लेकिन अब अंधकार को मिटाने वाला बनना है। जो रोशनी बाबा ने मुझे दी है, वह रोशनी सारे विश्व को मिले। ऐसा मेरा रूप हो, ऐसा संग का रंग हो। अच्छा। ओम् शान्ति।

गुल्जार दादी जी से मधुबन के भाईयों की रूहरिहान

(अभी आधा घण्टा योग किया, तो ऐसे लगा जैसे कुछ मिनट ही बैठे, समय कैसे बीत गया पता भी नहीं चला)

गुल्जार दादी:- लगन लग गई तो पता क्या पड़े! बाबा तो कहता है वायुमण्डल को ठीक करो। सतयुग में वायुमण्डल ठीक होगा, तो वायुमण्डल को कौन ठीक करेगा? आत्माओं को तो करना ही है लेकिन वायुमण्डल को भी ठीक करना है। सतयुगी राजधानी में तो वायुमण्डल कितना अच्छा है। तो अभी वायुमण्डल में वायब्रेशन भेजो। आखिर अन्त में तो सभी समझ जायेंगे ना कि यह गुप्त में कार्य चल रहा था लेकिन हमने पहचाना नहीं।

प्रश्न:- दादी जी, जैसे यहाँ बैठते हैं संकल्प पॉवरफुल होता है, वायुमण्डल को भेजते हैं लेकिन जब कारोबार में जाते हैं तो फर्क हो जाता है, यह फर्क मिट जाये, उसके लिए क्या करें?

गुल्जार दादी:- मतलब जो कारोबार का वायुमण्डल है उसका असर आ जाता है। हाँ, यह फर्क मिटेगा क्योंकि आदत पड़ जायेगी ना, जैसे वो आदत पड़ी है, वैसे यह भी आदत पड़ जायेगी, अटेन्शन देंगे तो हो जायेगा। हमें ब्रह्माबाबा को फॉलो करना है ना! ब्रह्माबाबा को कितनी जिम्मेवारियां थी, एक-एक आत्मा के भाव स्वभाव सबकी जिम्मेवारी थी फिर भी बाबा ने अपनी हिम्मत से वायुमण्डल चेंज किया ना, जो आये थे शुरू में और धीरे धीरे वो बदले तो सही ना। नम्बरवार भले होंगे लेकिन बदले तो सही। बाबा को एकदम पूरा साथ देने वाले भी तो थे ना।

प्रश्न:- दादी, वायुमण्डल में प्रकृति के पाँचों तत्व भी आयेंगे ना! बाबा कहता है इनकी भी सेवा करो, अभी यह परेशान कर रहे हैं फिर आपको यह मदद करेंगे, दासी बनेंगे। तो दादी इस समय उनकी सेवा के लिए क्या और किया जाये? अभी कहीं पर अग्नि का तत्व बहुत फोर्स कर रहा है, कहीं जल का उपद्रव, कहीं बर्फ पड़ रही है। पूरे विश्व के अन्दर पांचों तत्व बड़ा नुकसान कर रहे हैं। बाबा कहता है तुम बच्चे इनकी सेवा करो। इसके लिए कौन सा अच्छा-सा स्वमान ले करके योग किया जाये तो वायुमण्डल बनें, कैसे योग करें?

गुल्जार दादी:- यह तत्व भी सतोगुणी होंगे ना! सतयुग में दु:ख थोड़ेही देंगे, तो उनकी सेवा अभी करनी है। लेकिन इसके लिए जब अपनी सतोगुणी अवस्था जितनी जबरदस्त होती जायेगी, उतना सतोगुण उन्हों में ऑटोमेटिक पहुँचता रहेगा क्योंकि संकल्प तो हमको है ना, वायुमण्डल को ठीक करना है। जैसे तमोगुण के वायब्रेशन तीव्रगति से फैल रहे हैं, ऐसे हम अपने सतोगुण के वायब्रेशन चारों ओर फैलायें तो वो दब जायेंगे। वायुमण्डल बदलना तो है ना! इसके लिए इसी स्वमान में रहें कि ''मैं मास्टर रचयिता हूँ''। मालिक का बच्चा मालिक ही होता है। तो वो मास्टर रचता का स्वरूप हमारा होगा, तो रचता के वायब्रेशन ऑटोमेटिकली रचना के तरफ ही जायेंगे, तो यह हो सकता है। आखिर तो हमको ही वायुमण्डल को बदलना है। अपना राज्य स्थापन करना है, आत्मायें और वायुमण्डल दोनों को पवित्र बनाना है और यही हमारे योग का फल है। जितना-जितना हम पॉवरफुल बनेंगे, उतना-उतना हमारे साथ तत्व भी बदलेंगे। तो हमारा वायुमण्डल जितना पॉवरफुल होगा, उतना पांचों तत्वों को, सारे संसार को पहुंचेगा। जैसे पानी का फोर्स होता है, तो दूर तक जाता है ना। ऐसे ही हमारा वायुमण्डल अगर पॉवरफुल होगा, तो वह नेचुरल दूर-दूर तक जायेगा। अभी तो कभी अपने में भी लग जाता है। हम सिर्फ बाबा से लेके अपनी पॉवरफुल स्टेज पर ठहरे रहें, इससे ही फैलेगा। बाकी कोई एक-एक को थोड़ेही देते रहेंगे।

प्रश्न:- दादी, बाबा कभी-कभी कहता है कि आत्मायें बहुत दु:खी हो रही हैं, बहुत दु:ख बढ़ रहा है इनको मुक्ति जीवनमुक्ति देना है, तो हम किस स्थिति में रहें जो वे दु:ख से मुक्त हों, जब तक गेट खुले, क्योंकि गेट खुलेगा तब तो सब अपने आप मुक्त हो जायेंगे! अभी हमारी कौन-सी ऐसी स्थिति हो जो उनको दु:ख की फीलिंग कम हो जाए?

गुल्जार दादी:- इसके लिए हमें अपनी सम्पूर्ण स्टेज में ठहरना होगा। अब युद्ध में समय न जाये। जैसे अभी अच्छे बैठे हैं लेकिन बीच में संकल्प आ जाये यह करना है या यह हो गया, दोनों में से कोई संकल्प न आये। बस, सबको देना है, पहले खुद पॉवरफुल होंगे तभी तो देंगे। जैसे बाबा बैठता था तो फीलिंग आती थी ना, दे रहे हैं।

जैसे जब कोई योगयुक्त होकर बैठता है तो लगता है कि बहुत पावरफुल योग कर रहा है। हर एक को पुरुषार्थ तो करना है ना। और कोई फिर ऐसे भी हैं, जिनका योग नहीं लगता, वह तो होंगे ही, लास्ट तक होंगे इसलिए उसका ज्यादा सोचें नहीं। यह क्यों करता है, यह कब बदलेगा... अरे, पहले मैं तो

बदलूं। पहले मैं बदल जाऊं तो दुनिया अपने आप बदलेगी।

प्रश्न:- दादी, जैसे आपका नेचुरल योग है, योग लगाने की मेहनत नहीं है, आपके चेहरे से बोलने से योग दिखाई देता है, नेचुरल लगता है। ऐसे हम सबका योग नेचुरल हो जाए, उसके लिए हम क्या संकल्प रखें, जो हमारा योग भी आप जैसा हो जाये?

प्रश्न:- दादी, बाबा ने एक मुरली में कहा है कि आप बच्चे अगर एक मिनट पॉवरफुल अशरीरी बन जाओगे तो उसका असर अपने आप सारा दिन नेचुरल योग की तरफ खींचता रहेगा, वह स्टेज कैसे बनें?

गुल्जार दादी:- इसमें मेहनत तो है, अटेन्शन देना पड़ता है, बाकी हो जायेगा। बस, सभी पॉवरफुल योग में बैठें। अपने युद्ध में ही न लगे रहें। पॉवरफुल योग होगा तो उसका प्रभाव चारों ओर जरूर फैलेगा। जैसे बैठने समय योग पॉवरफुल हो जाता है ऐसे चलते फिरते, काम करते भी अटेन्शन हो तो नेचुरल हो जायेगा।

प्रश्न:- हम तो अपने ऊपर अटेन्शन देते हैं, बाकी हमारे चारों तरफ जो कुछ कारोबार चल रहा है यज्ञ में, क्या उसको हम सहज स्वीकार कर लें? अगर हमारे संकल्प उसके प्रति चलेंगे तो वो तो ठीक नहीं है, तो क्या उसे ठीक मानकर स्वीकार कर लें...

गुल्जार दादी:- स्वीकार क्यों करें! यज्ञ के हित में हो तो स्वीकार करेंगे ना। दूसरा - यज्ञ रक्षक बाबा बैठा है, बाबा को, बड़ों को हम सुना देवें कि यह थोड़ा हो रहा है...बस, हमारी जिम्मेवारी इतनी ही है क्योंकि हमारे संकल्प चलाने से कुछ होगा नहीं। और ही कहेंगे यह हमारे लिए पता नहीं क्या क्या सोचते हैं, इसलिए हम योगयुक्त होकर रहें तो वायुमण्डल में जरुर आयेगा और वो ऑटोमेटिक फैलता जायेगा। सिर्फ अटेन्शन चाहिए, बस।

प्रश्न:- दादी, समय के अनुसार अभी आगे यज्ञ के भविष्य के बारे में आपको कुछ प्रेरणायें आती हैं? क्योंकि कई बार सोचते हैं कि अभी इतनी वृद्धि हो रही है और बाबा कहता है अन्त में भक्तों की भीड़ लगेगी, बहुत सारे लोग आयेंगे, आप बच्चों की तैयारी होनी चाहिए। एक मुरली में बाबा ने कहा था कि इतनी भीड़ होगी जो आप उन्हें कहीं व्यवस्था नहीं दे पाओगे वे पत्थर को ही तकिया बनाके सोयेंगे, खाने की परवाह भी नहीं करेंगे.. तो क्या आपको लगता है कि अभी वह समय जल्दी आयेगा?

गुल्जार दादी:- हाँ, वह समय आयेगा तो सही लेकिन अचानक ही आयेगा। वायुमण्डल में कुछ न कुछ ऐसा होगा, जो अभी हँस रहे हैं, खा रहे हैं, मौज मस्ती कर रहे हैं, खराब काम भी कर रहे हैं वो सब ऑटोमेटिकली बन्द हो जायेगा। लेकिन उस परिवर्तन में थोड़ा टाइम तो लगेगा। अभी हमारा संगठन पहले पक्का हो, मेरे ऊपर किसी की कमजोरी का असर न हो, ऐसी अवस्था तो होनी चाहिए। कोई समय कैसा होता है, कोई दिन कैसा... सारा ग्रुप थोड़ेही वैसा बना है, कोई चढ़ता है, कोई ढीला होता है... दोनों ही होता है। हम अपने को देखें, बस और नेचुरल हमारे साथ जो रहते हैं, उनके ऊपर भी असर होगा। लेकिन देखो सारा टाइम पॉवरफुल अवस्था है? इससे दूसरों में भी पॉवर आ सकती है।

प्रश्न:- कोई कोई पूछते हैं, दादी जानकी 98 वर्ष पूरा कर रही हैं, सभी दादियां एडवांस पार्टी में जा रही हैं, दादी के बाद यज्ञ सम्भालने वाला कोई दिखाई देता है? हम तो कह देते दादी हमारी संगम के अन्त तक रहेंगी। बाबा कहता है मैं बैठा हूँ लेकिन फिर भी लोगों को संकल्प तो आता है ना! अगर सभी दादियां ऐसे ही चली जायेंगी तो प्रत्यक्षता किसकी होगी? आप दादियों को प्रत्यक्षता तो देखनी ही चाहिए!

गुल्जार दादी:- यह तो बाबा के हाथ में है। बाबा किसी न किसी में वो ताकत भरता है। बाबा को यज्ञ चलाना है, वो तो चलायेगा ही। किसी न किसी से तो करायेगा। जैसे अभी जानकी दादी तो सम्भाल रही है ना। ऐसे और कोई भी निमित्त बन सकते हैं। आप हम क्यों संकल्प चलायें, बाबा साथ है ना।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

पॉवरफुल तपस्या द्वारा सूक्ष्म संकल्प वा संस्कारों का परिवर्तन करो

1) वर्तमान समय मीठे बाबा ने हम सब बच्चों को यही इशारा किया है कि तुम हर एक को अब बाप समान बनना है, इसके लिए जब तक हम ऐसी पावरफुल तपस्या नहीं करेंगे तब तक बाप समान अव्यक्त फरिश्ता कैसे बनेंगे। समय के अनुसार हम हर एक को अव्यक्ति फरिश्ता बनना है तो अन्दर जो भी पुराने सूक्ष्म संकल्प हैं, संस्कार हैं, वृत्तियां हैं, वह सब बदलकर बाप समान बनने चाहिए तब ही हम अपनी कर्मातीत स्थिति का अनुभव कर सकेंगे। कर्मातीत बनने के पहले हम सब इस

भट्ठी में चेक करें कि सचमुच हमारे संस्कार बाप समान समीप होते जाते? बेहद की सेवाओं में तो दिन-रात रहते परन्तु अपनी सूक्ष्म स्थिति तपस्या मूर्त हो। इसके लिए हम सेवायें करते उपराम कहाँ तक रहते हैं? त्याग तो किया है परन्तु उपराम कहाँ तक बने हैं? यह चेक करना है। उसमें भी हम सबसे पहले देह-अभिमान से परे अशरीरी स्थिति का अनुभव करते हैं? अशरीरी रहने की प्रैक्टिस कहाँ तक है? इस प्रैक्टिस के लिए जरूर हमें विशेष एकान्त में रहने की, अन्तर्मुखी बनने की जरूरत है तभी हम अपने सूक्ष्म संकल्पों को सेकण्ड में समेट सकते हैं। चलते फिरते कर्म करते जब हम यही अभ्यास करें, संकल्पों को ब्रेक दें तब लाइट हाउस, माइट हाउस बन सकते हैं। जब ऐसी स्थिति हो तब कहेंगे साक्षात्कार मूर्त।

2) जैसे साकार में बाबा को देखा - बाबा प्रैक्टिकल में कर्मयोगी, साक्षात्कार मूर्त फरिश्ता दिखाई देते थे। हमें भी फालो फादर करना है। इसके लिए बीच-बीच में सब संकल्पों को थोड़ा समय भी समेटकर अभ्यास करें तो इसका बहुत बल मिल जाता है। बैटरी चार्ज हो जाती है। आत्मा बाबा के लव में लीन हो जाती है। यह लवलीन होना, अशरीरी बनना ही आत्मा की बैटरी चार्ज करने का साधन है, इसी से विल पावर आती है और परिवर्तन भी सहज होता है।

3) कई बार चलते-चलते जब थोड़ा भी स्थिति नीचे-ऊपर होती है तो उसके व्यवहार में, बोल-चाल आदि में अन्तर आ जाता है इसलिए यह अन्तर्मुखता की भट्ठी जो हमें मन का, मुख का मौन सिखाती है, इसकी हम हर एक को जरूरत है क्योंकि हम सबको एंजिल बनना है। एंजिल बनना ही बाप समान बनना है। तो चेक करें कि मेरी स्थिति कहाँ तक ऐसी बनी है? कहाँ तक हम विजयी बने हैं? विजयी तब कहेंगे जब हमारा आपस में अव्यक्ति मिलन हो, जिसको कहते हैं बहुत-बहुत स्वीट, बहुत-बहुत लवली। सेवाओं में तो दिन-रात रहते, वह ठीक है, बाबा की सेवा है। परन्तु बाप समान स्थिति सिर्फ सेवा से ही नहीं बनेंगी उसके लिए योगबल भी बहुत जरूरी है। लाइट हाउस, पावर हाउस भी बनना है। वह बनेंगे एकान्त से, जिसको बाबा कहते बच्चे एक के अन्त में चले जाओ। ऐसे तो सदा योग का ध्यान रखते लेकिन एक साथ कुछ टाइम लगाके मन का मौन और मुख का मौन रख तपस्या करो तो इसमें बहुत मजा है। इसी तपस्या से स्वयं को विजयी रत्न, मायाजीत रत्न, संस्कार जीत रत्न अनुभव करेंगे।

4) हमारी शुभ भावना है कि हम बाबा को भी यह रिजल्ट दें कि बाबा अब हम सब बातों से उपराम हैं और समानता के समीप पहुंच चुके हैं। इसके लिए जो भी सूक्ष्म व्यर्थ संकल्प इधर उधर के आते, चिंतन चलता वह सब स्टॉप हो जाए। ऐसे स्वीट साइलेन्स में रहने का अभ्यास करो तो सूक्ष्म संकल्पों में, व्यवहार में, बोल-चाल और भाषा में परिवर्तन आयेगा, बहुत-बहुत स्वीट बन जायेंगे।

5) आप सभी शान्ति की शक्ति की प्रयोगशाला में लाइट हाउस, माइट हाउस बनकर बैठे हो जो अन्दर हॉल में आते ही ऐसे अनुभव होता जैसे कोई चुम्बक के घर में आ गये हो। यह शान्ति के शक्ति की प्रयोगशाला है जो हमें भी खैंचकर ले आई। इसकी करेन्ट चारों ओर अपने आप फैल रही है। इसमे प्रैक्टिकल अनुभव होता कि हम आत्मा इस देह से न्यारी, सर्व संकल्पों से भी परे शान्ति की शक्ति से उड़ते जा रहे हैं, इसको ही बाबा कहते उड़ती कला। तो यह उड़ती कला में जाने की प्रयोगशाला है।

6) बाबा ने आप हम सबका कितना प्यार से श्रृंगार किया है और अष्ट शक्तियों के हीरों का रूहानी गुलाब गिफ्ट में दिया है, जो हर समय सदा साथ रखना है। आप सब सुबह से रात तक राजयोगी तो हो ही परन्तु राजयोगी माना हम सबसे न्यारे हैं, सबके प्यारे हैं। यह न्यारे प्यारेपन का बैलेन्स सदा बना रहे। हमारा यह राजयोग भी है तो ज्ञान योग, कर्मयोग भी है जिसमें हम सदा बैलेन्स रखकर चलें तो यही विधि है सदा निर्विघ्न बनकर आगे बढ़ने की। अच्छा - ओम् शान्ति।

रक्षाबंधन की शुभ बधाईयां

अनेक सेवाकेन्द्रों से हमारी आदरणीय बहनों ने स्नेह सम्पन्न सुन्दर-सुन्दर राखियां बहुत स्नेह वा सम्मान के साथ भेजी वा डायरेक्ट बांधकर गई हैं। प्यारे बापदादा ने तो दिव्य जन्म देते ही हम सभी को "पवित्रता" का रक्षासूत्र बांध दिया है। आप सबका रूहानी स्नेह, दिल की दुआयें मिलती रहती हैं। हृदय की पवित्र भावनाओं के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद। पूरा मधुबन परिवार तथा हमारी डिपार्टमेंट के सभी साथी भाई आपको दिल से बधाईयां दे रहे हैं।

ईश्वरीय सेवा में,
आपका दैवी भाई,
बी.के. राजू - मधुबन